१ ओअंकार ( ੧ਓ ) सति गुर प्रसादि

# क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव जी

## की

# शिक्षा और हमारा आचरण

>< >< >< >< >< >< >< >< >< >< ><

## मूल रूप में

सिख मिशनरी कालेज (रजि.)

लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

लेखक : प्रिं : हरिजभन सिंघ

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ

Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary

Mob. : 098149- 66882

Download Free

# क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव जी की शिक्षा और हमारा आचरण

**– प्रिं: हरभजन सिंघ, लुधियाना**

गुरू नानक देव जी का श्रद्धा से जन्म दिन मानाने वाले श्रद्धालु सज्जनो! आपका अहोभाग्य है, जिन्हें गुरू नानक साहिब की प्रेरणा और कृपा द्वारा सत्संग की प्राप्ति हुई है। सिक्ख धर्म के महान विद्वान, भाई गुरदास जी का कथन है :

**कुरबाणी तिन्हा गुरसिखां**

**भाय भगति गुरपुरब करंदे ।।**

भाई साहिब कहते हैं कि मैं उन गुरसिक्खों पर कुर्बान जाता हूँ जो प्रेमाभक्ति द्वारा गुरुपर्व मनाते हैं।

आज के दिन, हमें अपने – अपने हृदय में झांक कर देखना है कि गुरू नानक साहिब जी ने आज हमको क्या – क्या उपदेश दिये थे और हमने उन उपदेशों को अपने हृदय में कितना कुछ स्थान दे रखा है। हमने गुरुपर्व प्रेमाभक्ति से मनाना है। यह न हो कि तड़क – भड़क, पहनावे तथा दान का दिखलावा करके और केवल लंगर स्थान पर सामूहिक भोजन सेवन करके अपने – अपने घरों को चले जाएं और हमें पता ही न चले कि गुरू साहिब हमें कहना क्या चाहते हैं।

1. श्री गुरू नानक साहिब ने हमें एक ईश्वर अर्थात् अकालपुरख के संग जोड़ा था जो हम सब को पैदा करने वाला है। जो हमारा लालन – पालन करने वाला है, जिसके हाथ में हमें मार सकने की शक्ति है। गुरू साहिब ने हमेशा **'साहिबु मेरा एको है।। एको है, भाई एको है।।** ' की रट लगाई थी। पर हम अपने आप को गुरू नानक के सिक्ख कहलवाने वाले, एक प्रभु की राह छोड़कर भिन्न – भिन्न डेरों पर, पीरों की कब्रों पर, देवी देवताओं, पंडितों, ज्योतिषियों आदि के द्वार पर भटक रहे हैं। हम भूल ही गये कि गुरू जी ने हमें प्रताड़ित करते हुए कहा था :

**दुबिधा न पड़उ, हरि बिनु होरु न पूजउ ,**

**मढ़ै मसाणि न जाई ।।** (पृ. 634)

हम चलें तो गुरू नानक साहिब की शिक्षाओं के विपरीत और कहलायें उनके सिक्ख, क्या यह हो सकता है?

2. गुरू साहिब ने कहा कि संपूर्ण मानवता का एक मात्र धर्म है – एक प्रभु की आराधना करना, नाम सुमिरन करना। जपु जी बाणी के अंतिम श्लोक में, हम रोज़ ही पढ़ते हैं :

**जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ।।**

**नानक, ते मुख उजले, केती छुट्टी नालि ।।**

अर्थात् जो नाम का जाप करके शुभ कर्मो की कमाई करते हैं, वे अपना जीवन सफल कर जाते हैं और प्रभु की दृष्टि में स्वीकार्य हो जाते हैं। आओं! अपने मन से ही पूछें कि क्या हम नाम का जाप करते हैं?**'अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु'** के कथनानुसार, क्या हम अमृत वेला का सदुपयोग करके, प्रभु का स्तुति गायन करते हैं। गुरू साहिब तो कहते हैं :

**सो जीविया जिसु मनि वसिया सोइ ।।**

**नानक अवरु न जीवै कोइ ।।**

**जे जीवै पति लथी जाइ ।।**

**सभु हरामु जेता किछु खाइ ।।** (पृ. 142)

परन्तु हम हैं कि नाम का जाप न करके और विकारों में व्यस्थ होकर अपनी मौत आप मर रहे हैं। हम जिंदा नहीं, लाशों के समान हैं । कौन सी बुराई है जो हमारे अंदर घर नहीं कर गई?प्रभु से मुंह मोड़कर, गुरू से नाता तोड़कर लाजविहीन, धिक्कार पूर्ण जीवन, हम व्यतीत कर रहे हैं।

3. जब गुरू नानक देव जी को सुमेर पर्वत पर सिद्धों ने पूछा कि आप का गुरू कौन है, तो गुरू जी ने कहा कि 'शब्द' ही मेरा गुरू है :

**सबदु गुरू, सुरति धुनि चेला ।।** (पृ. 943)

यथा

**सबदु गुर पीरा, गहिर गंभीरा ,**

**बिनु सबदै जगु बउरानं ।।** (पृ. 635)

परन्तु हम शबद गुरू, श्री गुरू ग्रंथ साहिब का आसरा छोड़ कर अनेकों देहधारी गुरूओं के समक्ष माथे रगड़ रहे हैं। हम भूल ही चुके हैं कि हमें 'पूजा अकाल की, परचा शबद का, दीदार खालसे का' का उपदेश दिया गया था। क्या इन उपदेशों के होते हुए किसी देहधारी गुरू को मानने और पूजने वाला व्यक्ति, गुरू नानक का सिक्ख कहलाने का अधिकारी हो सकता है?

4. शबद गुरू के संग जुड़कर, गुरू-शब्द की कमाई करके, हमें ऐसा जीवन व्यतीत करना है जिससे मन तथा आत्मा, पापों तथा विकारों का त्याग कर, प्रभु की तरह निर्मल हो जाय। गुरू जी ने सफल जीवन जीने का आसान तरीका बताया है :

**किरत करना, नाम जपना, वंड छकणा ।**

किरत अर्थात् परिश्रम की कमाई हम सभी करते हैं परन्तु धर्म की कमाई जो गुरू बाबा ने बताई थी वह नहीं करते। गुरू साहिब ने मोदीखाने में बैठकर धर्म की कमाई करना सिखलाते हुए कहा :

हम तराजू या बांट द्वारा धोखो से कम क्यों तोलें? ऐसा कर के हम आत्मा पर बांट अर्थात् पत्थर बांध कर, अपनी आत्मा को डुबो देते हैं। नाप-तोल को भ्रष्ट क्यों करें? इससे ज़मीर भ्रष्टचार हो जाती है। गेहूं उस सृजनकर्ता की है, हम गिनती व नाप तोल के चक्कर में क्यों पड़ें? शक्कर उस करतार की है। कम शक्कर तोलनते समय कड़वे क्यों बनें? घाटा तो पड़ता है, प्रभु से टूट जाने पर और लाभ होता है प्रभु से जुड़ जाने पर। उस द्वारा प्रदत्त वस्तुएं समाप्त नहीं होतीं, सेवन करने वाले समाप्त हो जाते हैं।

आओ, हम अपनी-अपनी कमाई, रोजी-रोटी के धंधों की ओर दृष्टि डाल कर आत्म-निरीक्षण करें कि कहीं हम ठगी करने वाली अथवा झपटमार वृत्ति तो नहीं बना बैठे। कार्यालयों में काम करते हुए कहीं अभिमान में आकर हमारा स्वभाव कड़वा तो नहीं हो गया। मिलावट, हेरा-फेरी, बेईमानी, रिश्वत, काला धन कमाने वाले, गुरू नानक की सिखी के दायरे से बाहर ही रहेंगे। वे, ये सब भ्रष्ट कर्म छोड़े बिना गुरू नानक की गोद का आनंद नहीं ले सकते ।

5. गुरू जी ने 'माया' (धन) को 'गुजरान' यानि, जीवन व्यापन का साधन माना है। माया, जीवन का ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक है परन्तु तिजौरियां तथा बैंक भरने के लिए कतई नहीं। गुरू जी ने कहा है कि धर्म की कमाई करने से जीवन-व्यापन हेतु माया प्राप्त ही जाती है-परन्तु तिजौरियां तो पाप की कमाई से ही भरती हैं :

**पापा बाझहु होवै नाहीं, मुइआ साथि न जाई ।।** (पृ. 417)

जब गुरू नानक देव जी के पिता महिता कालू जी ने गुरू साहिब को सुल्तानपुर आकर पूछा, ''कितना कुछ धन जोड़ा है,'' तो गुरू जी ने उत्तर दिया :

**नहीं हाथ के आथि करे थिरता ,**

**इत आवत है उत हूं चल जाई ।।** (सूर्य प्रकाश ग्रंथ)

अर्थात्, ''पिता जी! धन मेरे हाथों में टिकता नहीं, इधर से आता है और उधर गरीबों, जरूरमदों की आवश्यकता पूर्ति हेतु चला जाता है।'' गुरू जी ने हमें उपदेश दिया था :

**घालि खाइ किछु हथहु देह ।।**

**नानक राहु पछाणहि सेइ ।।** (पृ. 1245)

परन्तु हम समाज में निर्धन, गरीब लोगों को देख कर भी, आंखें मूंद लेते हैं। हमें रोटी कपड़ा मिलना चाहिए, गरीब पड़ोसी चाहे भूखा, प्यासा व नंगा फिरता रहे, हमें क्या? मिल बांट कर खाने के, 'वंड छकण' के उपदेश को केवल गुरुपर्व वाले दिन, सामूहिक लंगर (भोज) छकाने तक ही सीमित कर देना, गुरू नानक की सिक्खी का आशय नहीं। बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में जरूरतमंदों की सहायता करना और हर दुखी व्यक्ति के दुख-सुख का भागीदार होकर, उसे अपने पैरों पर खड़ा करना, गुरू नानक मार्ग का मुख्य उद्देश्य है।

आज का तथाकथित समाजवाद, लूट-खसूट, खून-खराबा करके, सब को समानता का अधिकार देने में विश्वास रखता है, पर जिस समाजवाद की नींव गुरू नानक साहिब ने रखी, उसमें लूट-खसूट नहीं, खून-खराबा करके नहीं, बल्कि अपने हिस्से में से कुछ देकर, सूखे को हरा करने, खाली हाथ के पल्ले कुछ बांध कर, समाज को बराबर लाने का, **समाजिक न्याय** का विधान है।

आज ज़रूरत है इस बात की, कि सभी पंथक नेता, सिंघ सभाएं और सिक्ख जत्थेबंदियां-गुरू बाबे के, मिल बांटकर खाने के सिद्धांत को कार्यरूप में परिणित करने के लिए योजनाएं बनाएं, गरीबों को रोज़गार के साधन उपलब्ध करवाने के लिए फैक्ट्रियां, कारखाने खोलें और ज़रूरतमंदों की सहायता करने के लिए 'गुरू की गोलक' के खज़ाने का मुंह खोद दें। संगमरमर तथा सोने के क्लश गुरुद्वारों पर बहुत लग चुके हैं, गुरुद्वारों को बहुत शृंगार जा चुका है, **अब जरूरत है ज़रूरतमंद गुरसिखों का पेट भरने की और उनका खिला चेहरा देखने की।** जो विकारों की गहरी खाई में गिरे पड़े हैं, धर्म प्रचार की लहर चला कर, उन्हें उठाकर, नाम मार्ग पर लाने की जरूरत है। शरीर की खुराक तथा आत्मा की खुराक देकर ही हम अपनी कौम को खड़ा कर सकते हैं। यदि हम ने कौम व समाज के आर्थिक पक्ष की ओर ध्यान न दिया तो कौम व समाज पूंजीवाद का गुलाम बन कर रह जायेगा। गुरू नानक देव जी ने पूंजीपतियों का साथ नहीं दिया, गरीबों का साथ दिया था। उन्होंने पूंजीपति-मलिक भागो के प्रीतिभोज को ठुकरा कर मेहनतकश भाई लालो को गले से लगाया और बाजरे की रोटी स्वीकार की और कहा:

**नीचा अंदर नीच जाति, नीची हू अति नीचु ।।**

**नानकु तिन कै संगि साथि, वडिया सिउ किया रीस ।।**

**जिथै नीच समालीअनि, तिथै नदरि तेरी बखसीस ।।** (पृष्ठ 15)

6. मलिक भागो को समझाते हुए गुरू जी ने कहा था :

'कीकर के बीज को कांटे नहीं होते,

पर जब उस बीज को बो दिया जाता है तो

पौधा लग जाने पर कांटे और शूल निकल आते हैं।'

दूसरे का हक छीन कर, बेईमानी द्वारा एकत्र किया गया धन और उस धन से एकत्र किए गये पदार्थ, देखने को तो कष्ट देते वाले नहीं होते, परन्तु खा लेने पर कष्ट देते हैं। भ्रष्ट पदार्थ सेवन करने वाले का हृदय शुद्ध नहीं होता। ऐसे हृदय में सुमिरन का निवास कहां?हक – पराया वाले पदार्थ चीनी की चढ़ी ज़हर के समान हैं। गुरू जी ने कहा है :

**जे रतु लगै पकड़ै, जामा होइ पलीतु ।।**

**जो रतु पीवहि माणसा, तिन किउ निरमल चीतु ।।** (पृष्ठ 140)

पूंजीपति लोग समझते हैं कि उनके द्वारा (दिखलावे के लिए) किये गये दान से, उनके हर तरह के विकार, पाप व गुनाह क्षमा हो जायेंगे। यही समझकर वे अखंडपाठ की अनव्रत लड़ियां चलाते हैं, कई – कई अखंडपाठ करवाते हैं, सामूहिक लंगर के लिए अधिक से अधिक आटे की बोरियां दान में देते हैं, गुरुद्वारों में कमरे बनवाते हैं, ऊपर अपने नाम भी लिखवाते हैं। परन्तु क्या पराया हक मारकर किये गये दान पुण्य का कोई महत्व हो सकता है?गुरू जी ने इसे व्यर्थ का पाखंड कहा है। यथा :

**नानक, अगै सो मिलै, जि खटे घाले देइ ।।** (पृष्ठ 472)

गुरुद्वारे में सेवा करना उत्तम है, यदि कमाई हक हलाल की हो तो! गुरू नानक देव जी की यह हिम्मत थी कि उन्होंने मलिक भागों को ठुकराने की जुर्रत की! उसके द्वारा अनुचित तरीके से अर्जित किये गये धन का, गुरू जी ने खंडन किया। ऐसे पूंजीवाद को गुरू जी ने अस्वीकार कर दिया परन्तु आज राजसी, सामाजिक, धार्मिक अर्थात् प्रत्येक क्षेत्र में पूंजीपतियों का ही बोलबाला है। शायद ही कोई गुरद्वारा ऐसा हो जिसका प्रधान, भाई लालो जैसा मेहनतकश गरीब सिक्ख हो! कोई बिरला जत्थेदार ही होगा जो मेहनतकश श्रेणी में भाई लालो के स्तर का रहा हो!

7. गुरू नानक पूंजीपतियों को 'अंधा और बहरा' कहने का दम रखते हैं, परन्तु पूंजीपति, गुरद्वारा प्रबंधकों द्वारा खरीदे गये मजबूर भाई, मुल्लां, पंडित आदि धन के लोभ में पूंजीपति मायाधारियों की बेहतरी के लिए शंख बजाते हैं, लंबी – लंबी अरदास करते हैं और दुआएं मांगते हैं। गुरू नानक देव जी अत्याचारी राजाओं को 'खून पीने वाले कुत्ते' कहने का साहस रखते हैं परन्तु आज हमारे बीच में कितने हैं जो '**सचु सुणाइसी सच की बेला**' के कथनानुसार कड़वा सत्य कहने का साहस कर सकें? 'कांच को कांच और सांच को सांच' कहने का साहस कितने लोगों में है?मलिक भागो जैसे धनी सेठों को ठुकराने व भाई लालो जैसे गरीब, मेहनतकश इंसान को सम्मान देने का कितना कुछ साहस है?धार्मिक स्थानों पर जो चढ़ावा है, वह खून है या दूध का? – कौन इसकी परख करता है?किस के पास परखने का इतना समय है और किस के पास है इतना साहस?हम अपने आप को गुरू का सिक्ख कहलाने वाले तो बस 'भाई लालो व मलिक भागो वाली साखी' केवल आनन्द ले – लेकर सुन – सुना ही सकते हैं। इस साखी को जीवन में, धार्मिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में, अपनाने का साहस कौन करे?

8. गुरू साहिब ने सदैव गुरबाणी तथा संगत को ऊँचा दर्जा दिया। जब सिद्ध (योगियों) ने कहा कि कोई करामात दिखाओ तो गुरू जी ने कहा:

**गुर संगत बाणी बिना, दूजी ओट नहीं है राई ।।** – भाई गुरदास जी

करामात व करिश्मे दिखलाने वाले, अहंकार की चोटी पर चढ़े हुए सिद्धों ने, मन में यह विचार किया कि यदि गुरू नानक उनके रास्ते पर चल पड़े तो वह उनका पंथ रोशन कर सकता है। भाई गुरदास जी के अनुसार सिद्ध – योगियों ने गुरू जी को समीप के तालाब से पानी लाने के लिए खप्पर दिया। गुरू जी तालाब से खाली हाथ वापिस आ गए और कहा कि पानी नहीं

है। सिद्धों ने गुरू जी से पूछा कि क्या उन्होंने वहां तालाब वाली जगह पर रत्न, जवाहर और कीमती हीरे नहीं देखे?गुरू जी ने कहा, 'लेने तो वे पानी गये थे, हीरे – जवाहरातों से उनका क्या वास्ता?' सिद्ध ये वचन सुनकर लज्जा गये।

यह साखी हम सुन तो लेते हैं पर अमल से कोसों दूर हैं। गुरू नानक, जवाहरातों की करामात के इच्छुक नहीं थे। वे 'रिधि – सिधि अवरा सादि' का आह्वान करते हैं, परन्तु हमें किसी के बारे में पता लग जाये कि अमुक बाबा बहुत करामाती है, अमुक बाबे ने यह करामात कर दी, तो हम गुरू ग्रंथ साहिब को, गुरसिखी को पीठ दिखला कर, उन स्थानों पर जाने से भी संकोच नहीं करते जहां जाना सिख के लिए बिल्कुल वर्जित है! हमारा गुरू नानक पर विश्वास कच्चा है! बाबा नानक करामातों को लात मारता है, पर हम हैं कि गले लगाते हैं, करामातों को महत्व देते हैं। गुरू नानक देव जी तो कहते हैं :

**सिधु होवा सिधि लाई, रिधि आखा आउ ।।**

**गुपतु परगटु होइ बैसा, लोकु राखै भाउ ।।**

**मतु देखि भूला वीसरै,**

**तेरा चिति न आवै नाउ ।।** (पृष्ठ – 14)

परन्तु हम प्रभु के सुमिरन को भूलकर, तथाकथित करामाति व्यक्तियों का सुमिरन करना शुरू कर देते हैं। गुरू नानक के बताए रास्ते पर हम कब चलेंगे, यह अभी दूर की बात प्रतीत होती है।

9. गुरू नानक देव जी ने हमें केवल प्रभु सुमिरन की राह दिखाई है! गुरू नानक के मन में, किसी प्रकार के वहम – भ्रम व कर्म – काण्डी के लिए कोई स्थान नहीं है, परन्तु हम हैं कि नाम सुमिरन का मार्ग छोड़कर कर्म – काडी मार्ग अपना रहे हैं। गुरू साहिब ने तीर्थ – यात्राओं को रद्द करते हुए प्रभु के नाम को ही सच्चा तीर्थ कहा है:

**तीरथि नावण जाउ, तीरथु नामु है ।।**

**तीरथु सबद बीचारु, अंतरि गिआनु है ।।** (पृष्ठ 687)

परन्तु हम हैं कि अमृत – बेला में, नाम रूप तीर्थ पर डुबकी लगाना भूल गए और केवल जल में स्नान करके मुक्ति खोज रहे हैं। हम यह भूल ही गये कि गुरू साहिब ने शरीर के स्नान के लिए पानी और मन के स्नान के लिए बाणी पढ़ने, सुनने और अमल करने का उपदेश किया है।

हमारे पड़ोसी धर्मावलंबी ने यदि व्रत रखने शुरू कर दिये – करवा चौथ, सीतला का, पूर्णिमा का आदि। हमने ज़रा भी ढील नहीं की, गुरबाणी के आदेश को सोचे समझे, व्रत रखने शुरू कर दिये, जैसे यह भी सिक्खी कर्म हों। गुरू नानक साहिब तो पुकार – पुकार कर कह रहे हैं:

**अंनु न खाहि, देही दुखु दीजै ।।**

**बिनु गुर गिआन, त्रिपति नहीं थीजै ।।** (पृष्ठ 905)

**दृष्टि का व्रत** पराये – रूप को देखने से बचना है: **कानों का व्रत** निंदा न सुनना है : **हाथों का व्रत** बुरे कामों से बचना है। यह सब तो हम भूल गये, परन्तु एक समय पर रोटी न खाकर, पराधर्मी सिद्धांतों का धारण करने लगे हैं।

10. लाहौर में दुनीचंद को गुरू जी ने समझाया था कि पितृलोक नाम की कोई नगरी नहीं हैं है और श्राद्ध करने – करवाने आदि व्यर्थ कर्म हैं। ब्राह्मणों, भाईयों व ग्रंथियों द्वारा सेवन किया भोजन और दान – पुण्य की वस्तुएं – मृतक को नहीं पहुंचतीं, केवल इनकी उदरपूर्ति का साधन ही बनती हैं। गुरू जी बाणी में कहते हैं :

**आइआ गइआ मुइआ नाउ ।।**

**पिछै पतलि सदिहु काव ।।**

**नानक मनमुखि अंधु पिआरु ।।**

**बाझु गुरू डुबा संसार ।।** (पृष्ठ 138)

जीव ने संसार में जन्म लिया और चला गया । संसार में लोग उसका नाम भी भूल गए। उसके मरने के बाद पत्तलों पर, पिंड दान करके कौवों को ही आमंत्रित करते हैं, मृतक जीव को कुछ नहीं पहुंचता है। श्राद्धों वाला काम अज्ञानता भरपूर है। बिना गुरू के, जीव अज्ञानता में डूबा पड़ा है।

मृत्यु के पश्चात् जीव – आत्मा या तो प्रभु में अभेद हो जाती है या फिर किसी योनि में पुनर्जन्म ले लेती है – यह हे सिक्ख मत का सिद्धांत । तो फिर दान – पुण्य की वस्तुएं किस लिए ?परन्तु हम ऐसे चतुर और चालाक हैं कि सिक्ख मत के उपदेश पर अमल करना तो एक ओर रहा, श्राद्धों से मना करने वाले गुरू नानक साहिब का ही श्राद्ध मनाना शुरू कर दिया है। मानों हम यह समझे बैठे हैं कि गुरू नानक साहिब ईश्वर से एकमेव हुए ही नहीं बिल्क पितृ – लोक में कहीं बैठे हैं और हमारी पूरी व खीर का इंतजार कर रहे हैं। धिक्कार है ऐसी सोच को और ऐसी मानसिकता वाले प्रचारकों को। हमारे गुरद्वारे ऐसी मनमर्ज़ी की बातों, रीति रिवाजों अर्थात् मनमतों से कब पीछा छुड़वाएंगे, कब हमारे ग्रन्थियों व प्रबंधकों का होश आयेगी, जब हम गुरू साहिब की बाणी की परस्पर विरोधी पराधर्मी सिद्धांतों को गुरुद्वारों में प्रचारित करने से रुकेंगे।

11. हरिद्वार में गुरू नानक देव जी ने, सूर्य की विपरीत दिशा में, पानी फेंक कर, समझाया कि हम सूर्य के पुजारी नहीं बल्कि प्रभु का सुमिरन करने वाले हैं। परन्तु हम इस उपदेश को भूल गये और सूर्य – चंद्रमा से संबधित दिन – संक्रांति, पूर्णिमा तथा अमावस्या आदि को पवित्र दिन समझे बैठे हैं। हम गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज 'बारहमाहा' की बाणी को भी भूल गये, जिसमें गुरू साहिब कहते हैं कि –

**बे दस माह, रुती थिती वार भले ।।**

**घड़ी मूरत पल, साचे आए सहजि मिले ।।** (पृष्ठ 1101)

जिस जीव – स्त्री के अडोल हुए हृदय में सदैव स्थिर रहने वाले परम पिता परमात्मा का निवास हो जाता है, उसको बारह मास, सभी ऋतुएं, सभी तिथियां, समय की सभी घड़ियां, सभी मुहूर्त और पल सुहावने लगने लगते हैं। उसको किसी संक्रांति अथवा संगरांद की पवित्रता आदि का भ्रम व भुलेखा नहीं रहता ।

वह दिन ही अच्छा है जब प्रभु की याद आ जाये। परन्तु खेद की बात है कि सूर्य के एक राशि में से दूसरी राशि में जाने के दिन, संक्रांति को हम संगरांद के रूप में पवित्र दिन माने बैठे हैं, जैसे हम परम पिता परमात्मा के उपसाक न होकर सूर्य के उपसाक हों।

गुरू नानक देव जी, दिनों को पवित्र – अपवित्र समझने वालों को तो मूर्ख और गंवार की ही पदवी देते हैं। यथा :

**थिती वार सेवहि मुगध गवार ।।** (पृष्ठ 843)

परन्तु गुरद्वारे में हर मास घोषण की जाती है कि 'संगरांद का पवित्र दिन' अमुक तारीख को आ रहा है। हमें गुरुपर्व, ऐतिहाससिक दिन, शहीदों के शहीदी दिवस तो भूल ही गए। वह तो हम मनाते ही नहीं परन्तु संगरांद को गुरुपर्व से अधिक महानता दिये बैठे हैं। जहां तक बारहमाहा की बाणी पढ़ने – सुनने का सम्बन्ध है, वह तो अच्छी बात है, परन्तु भ्रम पैदा करना व करवाना कि आज संग्रांद का दिन बहुत पवित्र है, सिक्ख मत के आश्य के विपरीत है। कोई दिन बुरा नहीं, सभी दिन परमपिता परमात्मा, अकालपुरख द्वारा एकसमान बनाए हए हैं।

12. गढ़वाल के राजा विजय प्रकाश ने गुरू नानक साहिब से उनकी जाति पूछी तो आप ने कहा, 'मेरी कोई जाति नहीं हैं

केवल प्रभु स्वांग करता हूँ' :

**तूं साहिबु हउ सांगी तेरा, प्रणवै नानकु जाति कैसी ।।** (पृष्ठ 358)

परन्तु हम गुरू नानक साहिब के उपदेश को भूलकर जाति – पाति के कर्म – कांड में उलझ गए। यह जट्ट (जाट है, यह भापा है, यह मजहबी है, और यह हरिजन व लुबाणा है। हम एक प्रभु के इनसान होने का उपदेश भूल गये और अपने आप को संधू, ग्रेवाल, गिल, कोहली, साहनी आदि कहलवा कर अधिक खुश होते हैं – कौन किसी को रोकने वाला है कि वह बिरादरियों के जाति – पाति के भेद – भाव डालकर अपने – अपने गुरद्वारों की स्थापना न करें ?हमने स्वयं तो जाति – पाति का क्या त्याग करना और करवाना था, गुरुद्वारों को भी बिरादरियों तथा जातियों की लपेट में ले आये और नाम भी ऐसे रख लिये जो कि सिखी के नाम को चिढ़ा रहे है। गुरद्वारा तो गुरू का होना चाहिए न कि किसी जाति – बिरादरी का।

13. गुरू जी ने अनावश्यक छूआ – छूत, सूतक – पातक को रद्द करते हुए उपदेश दिया कि वास्तविक ज़रूरत तो हृदय में से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों की मैल को दूर करने की है। परन्तु हम आज अपने को सिख कहलाने वाले, एक दूसरे सिख से ही घृणा कर रहे हैं।

14. गुरू जी ने सहज मार्ग का उपदेश दिया कि शरीर के लिए कठिन योग साधना, विषम आसनों पर भूखे रहकर, नंगे पांव चालीसे काटने की कोई आवश्यकता नहीं है। इन से शरीर को कष्ट ही मिलता है, प्राप्ति कोई भी नहीं होती :

**अंनु न खाइआ, सादु गवाइआ ।।**

**बहु दुखु पाइआ, दूजा भाइआ ।।**

**बसत्र ने पहिरै ।। अहिनिसि कहरै ।।**

**मोनि विगूता ।। किउ जागै गुर बिनु सूता ।।**

**पग उपेताणा । अपणा कीआ कमाणा ।।** (पृष्ठ 467)

परन्तु, हम हैं कि चालीसा काटने को ही प्रभु मिलन का साधन समझे बैठे हैं। गुरू जी ने मौन धारण, चुप्पी साधने वाले को रद्द कर दिया था, परन्तु हम हैं कि किसी 'मोनी बाबा' को बहुत ऊँची अवस्था का मालिक समझे बैठे हैं।

15. गुरू जी ने चारों दिशाओं में खुदा का घर दर्शाया और कहा कि वह प्रभु सभी जीवों में बस रहा है:

**सभ महि जोति, जोति है सोइ ।।**

परन्तु हम हैं कि प्रभु को डेरों में, सचखंड बना – बना कर कैद किये बैठे हैं। सचखंड तो ईश्वर मिलन की अंतिम अवस्था का नाम है जहां पर मनुष्य के हृदय में केवल सत्य का ही प्रकाश होता है।

16. गुरू जी ने सिंहलाद्वीप (श्रीलंका) में, डोरे डालकर मन – मोहने आई रूपवान स्त्रियों को 'पुत्रियां' कहकर संबोधित करते हुए उपदेश दिया और कहा कि रूप शृंगार करके, अधनंगे पहरावे में आने वाली स्त्रिंया अपने ऊपर आध्यात्मिक 'नाम रंग' चढ़ाने आती हैं या सत्संग में जुड़े पुरूषों का, अपने हाव – भाव व हार – शृंगार द्वारा मन बहकाने आती हैं?**'देख पराईयां चंगीआं मावां भैणां धीआं जाणै।'** का उपदेश ग्रहण करने की प्रेरणा दी थी परन्तु आज कितने हैं ऐसे, जो पराई स्त्री को पुत्री, मां या बहन समझने में समर्थ हैं?

17. गुरू जी ने मथुरा में, भ्रष्ट तथा लालची पांडों के नीच आचरण का ज़ोरदार खंडन किया था और कहा था कि कलियुग किसी समय का नाम नहीं है बल्कि जीव के कुकर्मों का नाम ही कलियुग है। सिक्ख मत ने युगों के विचार को भी स्वीकार नहीं किया, बल्कि मानव स्वभाव द्वारा किये अच्छे – बुरे कर्मों की ही सतयुगत तथा कलियुग के प्रचलित विश्वास से तुलना की है।

गुरू जी ने –

**थानसट जग भरिस्ट होए डूबता इव जगु ।।**

कह कर धर्म स्थानों में पाक – पवित्र, सच्चे व उत्तम आचरण वाले प्रबंधकों, प्रचारकों, भाईयों, ग्रंथिओं की नियुक्ति पर बल दिया था, परन्तु पड़ताल करने की जरूरत है कि हमारे गुरद्वारे, धर्म स्थान, इस कसौटी पर कहां तक पूरे उतरते हैं। यदि नहीं उतरते तो इसकी जिम्मेदारी किसी और पर डालने से गुज़ारा नहीं हो सकता बल्कि जिम्मेदार वह स्वयं हैं जो ऐसा वातावरण पैदा करने वाले प्रबंधकों को वोट डालकर, लालचवश, धर्म को नकार कर, उनका चुनाव करते हैं।

18. किसी भी मत में चिन्ह धारण करने का अपना – अपना महत्व है। परन्तु यह चिन्ह, तभी सार्थक हो सकते हैं यदि उनमें सदगुण पैदा करने की धारण हो और यह केवल दिखलावे मात्र ही न हों, यह हमें किसी उच्च आदर्श से भी जोड़ते हों।

गुरू साहिब ने जनेऊ का खंडन करके इसे पहनने से इन्कार किया क्योंकि जनेऊ धारण करने में सत्य की धारण नहीं थी – यह दया, संतोष, जत और सत की भावना पैदा करने की सामर्थ्य नहीं रखता था, ब्राह्मण के इस कच्चेपन को गुरू जी ने ताड़ लिया था। परन्तु आज कई सिक्ख प्रचारक ब्राह्मणी मत को गुरमति में दुर्भावना पूर्ण मिलावट करके पेश कर रहे हैं। परन्तु किस में यह साहस है कि प्रचारक के कच्चेपन को प्रताड़ित कर, गलत को गलत कह सके।

जिन उच्च आदर्शो को खातिर हमें पांच – ककारों वाली रहित का धारक बनाया गया था, वे आदर्श भी जीवित रहने ज़रूरी है। यदि उनका पालन नहीं होता तो केवल चिन्ह धारण करना, केवल पांखड ही रह जायेगा और हम इस पाखंड वाले कच्चेपन से बच नहीं सकेंगे।

19. गुरू जी ने राजसी क्षेत्र के कच्चेपन को भी पहचाना और उसके विरुद्ध आवाज़ उठाई। बाबर जैसे अत्याचारी बादशाह को ललकारा और उसके हमले का विरोध किया। एयाश हकूमत के गिरे हुए आचरण तथा भारतीय जनता की बुज़दिली का भंडा फोड़ करने की हिम्मत की। अत्याचारी राजाओं को 'रक्त पिपासु शेर' और रिश्वतखोर अहिलकारों को 'कुत्ते' कहकर पुकारा है। उन्होंने अपने पैरोकारों को अपने दिखाए रास्ते पर चलने के लिए ललकारा और कहा कि यदि इस मार्ग पर चलते हुए शीश भी अर्पण करना पड़े तो यह सौदा कोई महंगा नहीं है :

**जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ।।**

**सिरु धरि तली गली मेरी आउ ।।**

**इतु मारगि पैरु धरीजै ।।**

**सिरु दीजै काणि न कीजै ।।** (पृष्ठ 1412)

यह गुरू नानक पातशाह जी के वचन हैं, परन्तु आज अपने मनों में, कौम के नेताओं, कर्णधारों की ओर झांकने की ज़रूरत है। कितने हैं धार्मिक तथा राजनीतिक नेता, जो सत्य का साथ दे सकें और अत्याचारी के अत्याचार को ललकार सकें। यदि हम उपरोक्त संदेश को भूलकर, अपने – अपने मतलब निकालने के लिए तथा एक दूसरे का मुंह – मुंलाहिज़ा रखने के लिए, सत्य से मुंह मोड़े बैठे हैं तो गुरू नानक के सिक्ख नहीं कहला सकते।

20. आज जरूरत है अपने जीवन का निरीक्षण व मूल्यांकन करने की, कि गुरू साहिब ने हमें अमृत का व्यापारी बनाया और नाम – रस सेवन करने की ताकीद भी की थी । यथा :

**बाबा मनु मतवारो, नाम रसु पीवै,**

**सहज रंग चरि रहिआ ।।**

**अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी,**

**सबदु अनाहद गहिआ ।।** (पृष्ठ 360)

परतु हम अमृतपान करके शराब की बोतलें खाली करना बहादुरी व धर्म समझे बैठे हैं। गुरू साहिब कहते हैं:

**इतु मदु पीतै नानका, बहुत खटीअहि बिकार ।।** (पृष्ठ 553 )

परन्तु हम हैं कि अखंड पाठ भी रखवा लेते हैं, उपरांत शराब की बोतल भी खाली कर लेते हैं। पता नहीं बाणी पर किसने अमल करना है और गुरबाणी की ये पंक्तियां किसके लिए लिखी गई हैं?कब गुरू के सिक्खों का शराब से पीछा छूटेगा और कब हम नाम रस का सेवन करेंगे?याद रखो! यदि गुरू के उपदेश को नहीं मानना, गुरू के आदेशानुसार नहीं चलना, तो गुरू की कृपा प्राप्त नहीं हो सकती । पिता उसी पुत्र पर प्रसन्न होता है जो पिता का आदेश माने।

यदि पुत्र सलाम (प्रणाम) तो करे, पर आदेश मानते ही जगह जवाब देने लगे तो ऐसे पुत्र का सलाम किसी काम का नहीं। यदि हम गुरू ग्रंथ साहिब को शीश झुकाते हैं तो हमारा यह भी कर्त्तव्य है कि गुरबाणी के आदेशों पर भी अमल करें नहीं तो -

**सलामु जवाबु, दोवै करे, मुंढहु घुथा जाइ ।।**

**नानक दोवै कूड़ीआ, थाइ न काई पाइ ।।** (आसा की वार)

के अनुसार हम गुरू से बेमुख ही समझे जायेंगे।

गुरू कृपा करे, सामर्थ्य प्रदान करे कि हम गुरू द्वारा दिखलाएं मार्ग पर चल सकें।

शराब का रस छोड़ें, अमृतपान करके गुरू वाले बनें। मेहनत करना, नाम जापना और बांट कर खानेके सुनहरी उपदेशों को हृदय में बसा कर ही हम गुरू नानक साहिब की खुशी के पात्र बन सकते हैं।

• • • • • • • • • •